पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.05.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-23 बैशाख-2083 दयानन्दाब्द 202 01 मई से 15 मई 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.05.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज का 151वां स्थापना दिवस सम्पन्न

हिन्दी भाषियों के साथ दुर्व्यवहार दुर्भाग्यपूर्ण –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार, 26 अप्रैल 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि नई युवा पीढी में राष्ट्रीयता की भावना भरने की नितान्त आवश्यकता है आज की शिक्षा प्रणाली को सुधारने की भी जरूरत है परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य आर्य समाज नगर शाहदरा दिल्ली एवं कालकाजी में आर्य समाज के 151 वें स्थापना दिवस पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र का आधार व भावी निर्माता हैं, आर्य समाज ने पाखण्ड, अन्धविश्वास के विरूद्ध जनजागरण किया उसे फिर से तीव्र गति से चलाना होगा महर्षि दयानन्द सरस्वती समग्र क्रांति के अग्रदूत थे उन्होंने सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया।उन्होंने कहा कि भाषा जात पात प्रांतवाद की राजनीति देश हित में ठीक नहीं है महाराष्ट्र में हिन्दी भाषियों के साथ दुर्व्यवहार दुर्भाग्यपूर्ण है। आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि स्थापना दिवस के अवसर पर कुछ नया संकल्प लेने का कार्य करें। कार्यक्रम का कुशल संचालन संजय आर्य व राजीव कोहली अनिल अरोड़ा ने किया आर्य रामचंद्र कपूर धर्मपाल आर्य अजय शास्त्री ने भजन प्रस्तुत किए एवं सुन्दर शास्त्री ने यज्ञ करवाया। प्रमुख रूप से यशोवीर आर्य, महेन्द्र भाई, आदर्श सलूजा,राकेश भटनागर,रविन्द्र आर्य, प्रवीण रेलन,दीपक सिब्बल,प्रेम नरूला, राजकुमार कपूर, संजय कपूर, महेश भार्गव, ओमप्रकाश गुप्ता, हरिओम बंसल, सुरेन्द्र जुनेजा आदि उपस्थित थे।

>>

गुरुकुल खेड़ा खुर्द का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जेवर हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखा जाए –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 12 अप्रैल 2026, दिल्ली देहात के गुरुकुल खेड़ा खुर्द का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ,आचार्य सुधांशु जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती युग प्रवर्तक थे। स्वदेशी का उद्घोष उन्होंने सबसे पहले दिया था उनसे प्रेरणा लेकर अनेको नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े महर्षि दयानन्द ने तर्क शक्ति का विकास किया और लोगों के सोचने समझने की दिशा ही बदल डाली सामाजिक कुरीतियों व रुढियों पर सीधा प्रहार किया वह सत्य के प्रहरी थे।अतः केंद्र सरकार से मांग है कि जेवर हवाईअड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर रखा जाए यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और नई पीढ़ी उनसे प्रेरणा ग्रहण करेगी। दिल्ली सरकार के मंत्री रविन्द्र इंदिराज ने कहा कि आज गुरुकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिससे चरित्रवान युवा तैयार होंगे जो माँ भारती की रक्षा करेंगे उन्होंने कहा कि आर्य समाज को अपने कार्यक्रम को जन तक पहुंचाना

होगा। गुरुकुल के प्रधान चौधरी ब्रह्म प्रकाश मान ने कहा कि गुरुकुल में 200 गाय है और 125 विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा पा रहे हैं।इस अवसर पर प्रणवीर आर्य, राजकुमार शास्त्री, एसीपी जितेन्द्र आचार्य, सत्यवीर शर्मा के प्रवंचन हुए। प्रमुख रूप से अरुण आर्य,रोहित कुमार,अवधेश प्रताप सिंह, राम कृष्ण शास्त्री, भोपाल सिंह आर्य, बृजेश आर्य, राधा कांत शास्त्री, अंजू जावा, सोहनलाल मुखी आदि उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द जी के अनन्य शिष्य पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी की 162वीं जयंती पर विशेष लेख

महर्षि दयानन्द जी के अनन्य शिष्य महाप्राज्ञ पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी की 162वीं जयंती

विचार और भाषा की उत्पत्ति –पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

केवल 26 वर्ष की अल्प आयु में इस संसार से विदा होने वाले पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी का यह संक्षिप्त निबंध सर्वप्रथम 16 जून, 1884 को 'द रीजनरेटर ऑफ़ आर्यावर्त' में प्रकाशित हुआ था। बाद में, इसे क्रमशः 1888 और 1893 में विरजानंद प्रेस, लाहौर और आर्यन ट्रैक्ट सोसाइटी, लाहौर द्वारा पुनः प्रकाशित किया गया। इसमें विद्वान् लेखक ने वेदों को 'ईश्वरीय ज्ञान' (ईश्वर–प्रदत्त ज्ञान) के रूप में प्रतिपादित किया है। पाठकों को उनकी अनूठी लेखन शैली की एक झलक देखने को मिलेगी, जिसके माध्यम से वे अपने विचार व्यक्त करते थे और जिससे उनकी अत्यंत गहन समझ का परिचय मिलता है। यही कारण है कि उनकी अंग्रेजी कृतियों के संग्रह को "Wisdom of the Rishis" (ऋषियों का ज्ञान) शीर्षक दिया गया। उनके लेखों का हिंदी अनुवाद लगभग सौ वर्ष से भी अधिक पहले पंडित संतराम और पंडित भगवद्दत्त जैसे प्रख्यात आर्य विद्वानों द्वारा किया गया था। तथापि, जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया, यह अनुवाद–कार्य अत्यंत कठिन था। इसी कारण "गुरुदत्त लेखावली" पुस्तक को समझना केवल सामान्य पाठकों के लिए ही नहीं, बल्कि विद्वानों के लिए भी सहज नहीं है। इसी के परिणामस्वरूप हम देखते हैं कि आर्य समाज के बाद के लेखकों द्वारा पंडित गुरुदत्त जी के ग्रंथों के उद्धरण अपेक्षाकृत बहुत कम उपयोग में लाए गए हैं। आज भी ऐसे वक्ता विरले ही मिलते हैं, जो किसी विशिष्ट विषय पर पंडित गुरुदत्त जी के विचारों का उद्धरण दें या उनका संदर्भ प्रस्तुत करें। मैंने आज लगभग तीन घंटे लगाकर विनम्र भाव से उनके एक लघु लेख को सरल हिंदी में अनूदित करने का प्रयास किया है। आशा है कि यह प्रयास पाठकों को उनकी विद्वत्ता की गहराई का कुछ आभास कराने में सहायक सिद्ध होगा तथा उन्हें उनके साहित्य के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करेगा। – भावेश मेरजा,

भाषा (language) की उत्पत्ति के विषय में कुछ कहना आवश्यक है। इसके साथ ही लगभग उसी समय विचार (thought) की उत्पत्ति भी माननी पड़ती है। जैसा कि अरस्तू कहते हैं, भाषा बाह्य विचार मात्र है, और विचार आंतरिक भाषा है। दोनों ही "लोगोस" (logò) हैं। यहाँ स्वहवे का अर्थ है – विचार और वाणी का एक ही तत्त्व", अर्थात् शब्द और विचार दोनों एक ही मूल तर्क या चेतना के रूप हैं।, किसी भी भाषा में जहाँ कोई शब्द होता है, वहाँ उससे संबंधित विचार अवश्य होता है, और जब तक कोई विचार किसी शब्द में स्थिर नहीं होता, तब तक वह विचार विचारक के मन में स्पष्ट और निश्चित रूप नहीं लेता। इस प्रकार मनुष्य के विचार और भाषा का विकास साथ–साथ हुआ, और मनुष्य के विचार को उसकी जड़ तक पहुँचकर जानने का सबसे सुनिश्चित उपाय मानव–भाषा के इतिहास का अन्वेषण करना है। यहीं वेदों का अत्यंत महत्त्व है। वे हमें मानव–भाषा और विचार के इतिहास को उसकी उत्पत्ति तक खोजने के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान करते हैं। और चूँकि वे हमें मानव–विचार की उत्पत्ति का "कब" और "कैसे" बताते हैं, इसलिए उन्हें "प्रकाशन" (Revelation) कहा जाना उचित है। अन्य कोई भी विद्यमान ग्रंथ इस शर्त को पूरा नहीं करता, अतः वह "प्रकाशन" नहीं हो सकता। परंतु फिर प्रश्न उठता है कि भाषा कहाँ से आई? यह प्रकाशन का सिद्धांत हमें सही दिशा में ले जाता है।

यह सर्वविदित है कि भारतीय व्याकरणाचार्य संस्कृत भाषा के वर्णों (Alphabetical sound) को "अक्षर सामन्मोय" कहते हैं। इसका अर्थ है– वेद, अर्थात् वह प्रकाशन जो ध्वनियों (literal sounds) से बना है। दूसरे शब्दों में, जैसा कि हमने देखा है, हिंदू मत के अनुसार, जो कि एकमात्र सत्य है, ये वर्ण–ध्वनियाँ प्रकृति की शाश्वत ध्वनियाँ (अक्षर) हैं। मनुष्य की स्पष्ट वाणी, जो इन ध्वनियों से बनी है, उसकी उत्पत्ति भी प्रकृति की ध्वनियों से ही हुई है। और यह बात प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करेगा, यदि वह संस्कृत भाषा के धातुओं (तववजे) का सावधानीपूर्वक अध्ययन करे, जिनसे यास्क और शाकटायन के अनुसार भाषा की सभी संज्ञाएं, क्रियाएँ आदि (nouns and verbs etc) बनी हैं। ये धातुएँ वे ध्वनियाँ हैं, जिन्हें मनुष्य ने प्रकृति से अनुकरण करके सीखा, और इन्हीं से धीरे–धीरे वह भाषा विकसित हुई, जिस पर आज हमें गर्व है, तथा अन्य भाषाएँ भी इसी से विकसित हुईं। कुछ समय तक मनुष्य केवल धातुओं से ही बात करता था, क्योंकि वह अन्य प्रकार से बोल ही नहीं सकता था। ये धातुएँ एक–एक विचार को व्यक्त करती थीं। जब मनुष्य इतना विकसित हुआ कि दो विचारों के संयोजन की आवश्यकता अनुभव हुई, तब उन दोनों विचारों को व्यक्त करने वाली दो धातुओं को साथ–साथ रखा गया। समझने के लिए मैं एक उदाहरण देता हूँ, जो भाषा–निर्माण की एक बाद की प्रक्रिया– संज्ञाओं के निर्माण–से लिया गया है, और अंग्रेज़ी भाषा से है, जो पाठक के लिए अधिक परिचित होगा। "kingdom" शब्द का अर्थ है – राजा का घर या राज्य। इसके बनने से पहले, ये दोनों शब्द (king and dom) अलग–अलग और स्वतंत्र अर्थ रखते थे। जब इन दोनों के संयुक्त अर्थ को व्यक्त करने की आवश्यकता हुई, तब इन्हें साथ रखा गया। परंतु "dom" ने अपनी स्वतंत्रता तुरंत नहीं खोई, और पहले की तरह ही वह अलग शक्ति का बोध कराता रहा। धीरे–धीरे वह "king" पर निर्भर हो गया और अपनी स्वतंत्र शक्ति खो बैठा। वास्तव में, वह चीनी व्याकरणाचार्य की एक अभिव्यक्ति उधार लेकर कहें तो "रिक्त" हो गया। इसके बाद वह केवल एक प्रत्यय (suffi) मात्र रह गया। ठीक यही प्रक्रिया उन धातुओं के साथ भी हुई, जिन्हें हमने भाषा–विकास के दूसरे चरण में साथ रखा था। उदाहरण के लिए, "रुद्" (चिल्लाना) और "र" (देना) धातुओं को उस समय साथ रखा गया, जब ऐसे प्राणी के लिए शब्द बनाना आवश्यक हुआ, जो गर्जना की ध्वनि देता है। इससे "रुद्–र" (या "रुद्र") शब्द बना, जिसका अर्थ है "गर्जना देने वाला"। यह शब्द एक यौगिक (compound) है, जो बाद के "इन्द्रजित" शब्द के समान है, जिसका शाब्दिक अर्थ "इन्द्र को जीतने वाला" है, जिसमें मुख्य बल "इन्द्र" शब्द पर होता है। परंतु "रुद्र" में मुख्य विचार "रुद्" धातु का होने के कारण, दूसरी धातु शीघ्र ही "रिक्त" हो गई और केवल एक प्रत्यय बनकर रह गई, जो कर्तृत्व का भाव देती है, जैसे "इन्द्रजित" में होता है। इस प्रकार संज्ञाओं की रचना की प्रक्रिया को समझाने के बाद, शेष को यहीं छोड़ता हूँ, क्योंकि यहाँ हमारा विषय मुख्यतः संज्ञाओं से ही संबंधित है। अब एक बात हमें याद रखनी चाहिए–किसी भी विचार को ठीक से समझने के लिए, हमें उस शब्द को, जो उसका बाहरी रूप है, उसकी धातु तक ले जाना चाहिए, और वहाँ से उसका मूल अर्थ निकालकर, उसके मध्यवर्ती सभी चरणों को समझते हुए उसके वर्तमान अर्थ तक पहुँचना चाहिए। तभी हम अपने सभी विचारों के इन्द्रियजन्य प्रारंभ (Sensuous Beginning), अर्थात् उनके वास्तविक "प्रकाशन" को जान सकेंगे। परंतु इस भाषिक अन्वेषण के अंधकारमय समुद्र में मार्गदर्शन के लिए हमें प्रकाश–स्तंभ (light & houses) की आवश्यकता है। कोई मध्यवर्ती कड़ी होनी चाहिए, जो हमें उत्पत्ति और विकास का कुछ संकेत दे सके। और वह प्रकाश–स्तंभ, वह कड़ी, वेद प्रदान करते हैं। वहाँ हम विचारों को विकसित होते और प्रकट होते देखते हैं, और चूँकि वे ही एकमात्र विद्यमान "प्रकाशन" हैं, इसलिए उनका विशेष महत्त्व है।

वेद के नामों का स्पष्टीकरण– संस्कृत में "Revelation" को "श्रुति", "आम्नाय" या "वेद" कहा जाता है। "श्रुति" का अर्थ मैं पहले बता चुका हूँ – यह प्रकृति की ध्वनि (voice of nature) है। जब ये ध्वनियाँ अपना कार्य कर लेती हैं और मनुष्य उन विचारों को जान लेता है, जिन्हें वह इनके बिना नहीं जान सकता था, तब वही "श्रुति" "वेद" बन जाती है, क्योंकि अब वह ज्ञात हो चुकी होती है। "आम्नाय" शब्द "मन" धातु से बना है, जिसका अर्थ है – चिन्तन करना, और "आ" उपसर्ग के साथ इसका अर्थ होता है – जिसका चारों ओर से, भली–भाँति चिंतन किया जाना चाहिए। वास्तव में, केवल श्रुतियों के गहन और आलोचनात्मक अध्ययन से ही हम उन गीतों के समूह में सच्चे "प्रकाशन" तक पहुँच सकते हैं। यह "वेद" संहिताओं से स्वतंत्र है। चाहे संहिताएँ रहें या न रहें, वेद का अस्तित्व बना रहता है। परंतु यदि संहिताएँ नष्ट हो जाएँ, तो सच्चे वेद को पुनः प्राप्त करना कठिन हो जाएगा, क्योंकि वह उन्हीं में सुरक्षित है, जैसा कि उनके नाम भी बताते हैं। संहिताओं को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि कहा जाता है। इनके अर्थ इस प्रकार हैं– ऋग्वेद वह संग्रह है, जिसमें वेद ऋचाओं (स्तुतियों) के रूप में विद्यमान है; सामवेद वह है, जिसमें वेद सामों (गान) के रूप में है; और इसी प्रकार अन्य। इस अर्थ में ये ग्रंथ रूपक रूप (in a figurative sense) से कभी–कभी "वेद" कहे जाते हैं; परंतु इनके वास्तविक नाम "ऋ", "साम" आदि ही हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि वास्तविक वेद कोई पुस्तक नहीं है, वह केवल उच्चरित वाणी (articulate speech) भी नहीं है। सच्चा वेद तो अनुभूति और ज्ञान (feeling and knowing) का विषय है, और उस अनुभूति तथा ज्ञान को संहिताएँ हमें स्पष्ट रूप में प्रदान करती हैं।

– अनुवाद एवं प्रस्तुतिरू भावेश मेरजा

सा.आ.वी. दल का शिविर नोएडा में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2026 इस बार नोएडा में दिनांक 7 जून से 14 जून 2026 तक एमिटी इन्टर नैशनल स्कूल, सैक्टर–44, नोएडा–44, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 26 मई 2026 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका (9672286863),
मुदुला चौहान, संचालिका (9810702760),
आरती खुराना, सचिव (9910234595),
नीरज कुमारी, कोषाध्यक्ष (8920208536)

युवा निर्माण से होगा राष्ट्र निर्माण ।। ओ३म् ।। हे कर्मशील मनुष्य तू कर्म कर

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय शिविर

शनिवार 30 मई से शनिवार 6 जून 2026 तक

विशाल आर्य युवक चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण शिविर

स्थान : ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल सैक्टर-44, नोएडा

उद्घाटन समारोह रविवार 31 मई, प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक ✸ **भव्य समापन समारोह** शनिवार 6 जून, प्रातः 11 से 1:00 बजे तक

नयी पीढ़ी को मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त एवं देशभक्त बनाने का संकल्प

राष्ट्रीय भावना, अनुशासित जीवन, नैतिक शिक्षा तथा युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने तथा उच्चकोटि के व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, ध्यान, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, स्तूप आदि आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ-साथ वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा, भाषण कला, नेतृत्व कला व आत्मविश्वास के विकास हेतु शिविर का आयोजन।

आवश्यक नियम व निर्देश :- (1) इच्छुक नवयुवक 250 रू० प्रवेश शुल्क सहित प्रवेश पत्र भरकर **अंतिम तिथि** 15 मई 26 तक अपना स्थान सुरक्षित करवा लें। (2) सभी शिविरार्थी 30 मई को सायं 6 बजे तक शिविर स्थल पर रिपोर्ट करें (3) पूर्ण वेशभूषा-सफेद टी शर्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद निक्कर, सफेद जुराब, सफेद कपड़े के जूते, कान तक की लाठी, टार्च, सन्ध्या यज्ञ की पुस्तक, कापी, पैन, कुर्ता पायजामा व ऋतु अनुकूल बिस्तर भी साथ लायें। (4) आवश्यक बर्तन थाली, कटोरी, मग, गिलास आदि भी साथ लायें (5) आयु 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के युवक शिविर में भाग ले सकते हैं। (6) अनुशासन व दैनिक दिनचर्या प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक का पालन करना अनिवार्य होगा। (7) परिषद् की ओर से भोजन व आवास प्रबन्ध निःशुल्क रहेगा।

बौद्धिक : सर्वश्री डॉ. जयेन्द्र आचार्य,रविदेव गुप्ता,यशपाल शास्त्री,गवेन्द्र शास्त्री, विमलेश बंसल, श्रुति सेतिया, पिंकी आर्या

शिक्षक गण: रितम आर्य, मोहित आर्य, जय आर्य, निखिल आर्य, अजय आर्य, रोहित कुमार, मोहित आर्य (अलीगढ़)

प्रबन्धकगण : प्रि. रेणू सिंह,मोहित कपूर,प्रताप सिंह,ममता-यज्ञवीर चौहान,कै. अशोक गुलाटी,कमल आर्य,गौरव झा,देवेन्द्र गुप्ता, संतोष शास्त्री,विरेश आर्य,अजेन्द्र शास्त्री, विवेक अग्निहोत्री, त्रिलोक आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, दिनेश आर्य

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

आप जानते ही हैं कि इस विशाल रचनात्मक आयोजन में नौ दिन तक तीन समय के प्रातः राश तथा भोजन प्रबन्ध पर हजारों रूपये व्यय हो जाता है जो कि आपके स्नेह व सहयोग से ही पूरा होना है। अतः आपसे अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज या मित्रों की ओर से अधिक से अधिक सहयोग करवाने की कृपा करें। कृपया समस्त क्रास चैक/ड्राफ्ट **''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली''** के नाम से भिजवाने की कृपा करें। आप ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, मसाले, पाउडर दूध, सब्जी, दलिया के रूप में भी सामान भिजवाकर सहयोग कर सकते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी ओर से तथा अपने इष्ट मित्रों से भी अधिक से अधिक सहायता राशि भिजवाने की कृपा करेंगे ।

स्वागत समिति : सर्वश्री राजीव कुमार परम, आर.पी. सूरी, यशोवीर आर्य, जितेन्द्र डावर, कपिल कुमार राय, राजकुमार भाटिया विधायक,राजू कोहली, पुनीत कोहली, जितेन्द्र नरूला, मायाप्रकाश त्यागी, डॉ. आर.के. आर्य, देवेन्द्र सैनी, रामकृष्ण तनेजा, ओम सपरा, अर्चना पुष्करना, ऋचा गुप्ता, के.एल. पुरी, अरूण बंसल, विनोद त्यागी, पूजा सलूजा, अजय पथिक, देवेन्द्र आर्य बन्धु, के.के. यादव, अविनाश बंसल, विरेन्द्र महाजन, बृजेश गुप्ता, अशोक सरदाना, प्रेम सचदेवा, के.एल. वर्मा, प्रवीन तायल, प्रदीप गोयल, अनिल मित्रा, राजेन्द्र वर्मा, डॉ. गंगा शरण आर्य, रवि चड्डा, ओ.पी. पांडेय, सुरेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्ता, कै. रूद्र सैन सिंधु, ममता शर्मा, कृष्णा पाहुजा, अमरसिंह सहरावत, कौशल्या रानी, आदर्श सलूजा, डा. गजराज सिंह आर्य, विमला ग्रोवर, संजीव महाजन, संगीता गौतम, रमा-यशपाल, चावला, डॉ. रचना चावला, विद्योतमा झा, प्रो. करूणा चांदना, सुनीता बुग्गा, राकेश चोपड़ा, संजीव सिक्का, नरेन्द्र आर्य सुमन, रमेश छाबड़ा, अशोक जेठी, अजय मक्कड़, डालेश त्यागी, विनीता चावला, अंजू जावा, आदर्श आहूजा, विरेन्द्र आहुजा, डिम्पल भंडारी, सीमा ढींगरा, यशपाल आर्य, इन्द्रजीत महाजन, सहदेव नांगिया, कुसम भंडारी, चन्द्रमोहन कपूर, प्रि. अंजु महरोत्रा, हर्षदेव शर्मा, अशोक गुप्ता, स्वदेश शर्मा, राजेश मेहन्दीरत्ता, सुरेश आर्य, सुशीला गम्भीर, देवेन्द्र आनन्द, उर्मिल-महेन्द्र मनचन्दा, बलदेव गुप्ता, सी.ए. हंसराज चुघ, मधु सिंह, रजनी गर्ग, राधा-दशरथ भारद्वाज, डॉ. विपिन खेड़ा, पुनीता चौधरी, मंजुला कुकरेजा, महेन्द्र जेटली, संतोष वधवा, अमरनाथ बत्रा, विजय कपूर, सुशील बाली, अतुल सहगल, राधाकांत शास्त्री, मानवेंद्र शास्त्री, राजेश सपरा, राजेश मेंहदीरता, सुशील आर्य, के.एल. राणा, सोमगिरी गोस्वामी, देवदत आर्य

निवेदक

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**आनन्द चौहान** शिविर संरक्षक	**प्रवीन आर्य/सुरेश आर्य** राष्ट्रीय मंत्री	ठाकुर विक्रम सिंह मधु भसीन गायत्री मीना अरुण अग्रवाल आनन्द प्रकाश आर्य विकास गोगिया वेदप्रकाश आर्य स्वागताध्यक्ष	अजय चौहान योगराज अरोड़ा मे.जन. आर.के.एस. भाटिया कर्नल कर्ण खर्ब कर्नल संजय खरबंदा रामलुभाया महाजन डॉ. डी.के. गर्ग स्वागताध्यक्ष
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	**दुर्गेश व रामकुमार आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**देवेन्द्र भगत** राष्ट्रीय मंत्री		
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**अरूण आर्य,** शिविर प्रबन्धक	**सौरभ गुप्ता** राष्ट्रीय संगठन मंत्री		

कार्यालयः आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन : 9810117464, 9013137070, 9818530543, 9971467978

YouTube aryayuvakparishad Email: aryayoughn@gmail.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 778वां वेबिनार सम्पन्न

सांख्य दर्शन की जीवन में उपयोगिता पर गोष्ठी सम्पन्न

सांख्य दर्शन ग्रन्थ से अपने व्यवहार को बना सकते हैं श्रेष्ठ –अतुल सहगल

सोमवार, 20 अप्रैल 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान सांख्य दर्शनकी जीवन में उपयोगिता विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 777 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए, मानव उन्नति के परिपेक्ष्य में इसकी महत्ता को सामने रखा। उन्होंने सबसे पहले भारतीय संस्कृति के 6 दर्शन ग्रंथों की चर्चा करते हुए थोड़ा थोड़ा प्रत्येक के बारे में बताया। वास्तव में हम सामान्य जनों को वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों को पढ़ने के लिए कहा जाता है और हम उनका अध्ययन करते भी हैं परन्तु दर्शन शास्त्रों की चर्चा और अध्ययन कम होती है। अधिकांश लोग दर्शन शास्त्रों के बारे में बहुत कम जानते हैं। वक्ता ने दर्शन ग्रंथों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए सांख्य दर्शन के बारे में विस्तृत व्याख्या आरम्भ की। यह एक आस्तिक दर्शन है। यह मनुष्य के अन्तःकरण की रचना के बारे में विस्तृत ज्ञान देता है। दुःखों के मूल कारण समझाता है और दुःखों के स्थायी निवारण का मार्ग दर्शाता है। अपने विवेक को प्रबल करने के उपाय बताता है। ध्यान की महिमा का विवेचन करते हुए, पांच महा क्लेशों को दूर करने का उपाय सामने रखता है। महर्षि कपिल द्वारा 3500 वर्ष पूर्व रचा गया यह अमूल्य ग्रन्थ मोक्ष प्राप्ति का व्यवहारिक मार्ग ही तो प्रशस्त करता है। वक्ता ने इस दर्शन के कुछ चुने हुए महत्वपूर्ण सूक्तों की व्याख्या की। इनमें एक सूक्त शरीर और अन्तःकरण को बनाने वाले 25 तत्वों का वर्णन करता है। तत्पश्चात वक्ता ने सामान्य मनुष्य के जीवन में सांख्य दर्शन की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की। वक्ता ने गहराई से ग्रन्थ के सूक्तों का विश्लेषण करते हुए कहा कि हम इस ग्रन्थ की सहायता से अपने व्यवहार को श्रेष्ठ बना सकते हैं।अपने कर्मों को धर्म के सिद्धांतों के साथ जोड़ के बंधन और दुःखों से छुटकारा पा सकते हैं। सुधीर बंसल ने भी अपने विचार व्यक्त किए,कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, प्रवीना ठक्कर, कमला हंस आदि के मधुर भजन हुए।

नारी वंदन अधिनियम की उपयोगिता पर गोष्ठी सम्पन्न

सामाजिक न्याय की और बढ़ता कदम –श्रुति सेतिया

सोमवार 27 अप्रैल 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में नारी वंदन अधिनियम की उपयोगिता विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया ्यह करोना काल से 778 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा कि संसद के दोनों सदनों में पारित नारी वंदन अधिनियम महिला सशक्तिकरण की ऐतिहासिक पहल है। पीएम मोदी के नेतृत्व में यह अधिनियम राजनीति और निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाएगा। अब तक शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार की योजनाओं से करोड़ों महिलाओं को लाभ मिला है। लेकिन नीति निर्माण में उनकी भागीदारी कम थी। यह अधिनियम महिलाओं को अवसर देगा, जिससे नीतियां अधिक संवेदनशील और समावेशी बनेंगी। यह सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में बड़ा कदम है। समाज को महिलाओं को अधिकार के साथ सम्मान और अवसर देने होंगे। यह अधिनियम सशक्त, विकसित भारत की नींव रखेगा। मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष विमला आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए. परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आर्य समाज नगर शाहदरा दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रविवार 26 अप्रैल 2026 आर्य समाज नगर शाहदरा दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य का अभिनंदन करते यशोवीर आर्य, संजय आर्य, राजीव कोहली, राजकुमार कपूर, अशोक गुप्ता, हरिओम बंसल आदि

>>

डॉ. अम्बेडकर और आर्य समाज का शिक्षा आंदोलन

डा. अम्बेडकर जी का जन्म 1891 में हुआ था। बड़ौदा नरेश स्वामी दयानंद जी के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। जब उन्होंने देखा कि डॉक्टर अंबेडकर को शिक्षा प्राप्त करने में विशेष व्यवधान आ रहा है तो उन्होंने स्वामी दयानंद जी के विचारों से प्रभावित होकर इस प्रतिभावान युवा के लिए विशेष साधन उपलब्ध कराने के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया। इस प्रकार डा. भीमराव अम्बेडकर को बी.ए., एम.ए., पी.एच,डी., डी.एस.सी. (लन्दन), एल.एल.डी., बार–एट–ला, जैसी उपाधियों से विभूषित और प्रकाण्ड पण्डित बनाने में आर्यसमाजी आन्दोलन का विशेष योगदान रहा। आगे चलकर जब स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने महर्षि दयानंद जी के अछूत उद्धार के कार्य को आगे बढ़ाया और इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किये तो डॉक्टर अंबेडकर स्वामी श्रद्धानंद जी के इस प्रकार के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। डॉ अंबेडकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि 'स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सर्वश्रेष्ठ सहायक और समर्थक थे। आज हम डॉक्टर अंबेडकर जी की जयंती मना रहे हैं। वेदों की ओर लौटने का आवाहन करके स्वामी दयानंद जी महाराज ने हमें अपने स्वर्णिम अतीत का बोध कराया था। इस प्रकार राष्ट्रबोध, संस्कृति बोध और इतिहास बोध के साथ–साथ स्वबोध से प्रेरित होकर हमने डॉक्टर अंबेडकर का निर्माण किया। जिनका भारत के संविधान के निर्माण में विशेष योगदान रहा। यद्यपि जिस संविधान को हम डॉक्टर अंबेडकर द्वारा निर्मित कहते हैं उस संविधान का 80 प्रतिशत भाग विदेशी संविधानों से लिया गया है। उसमें भी सबसे अधिक भाग ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किए गए 1935 के भारत सरकार अधिनियम से लिया गया है। डॉक्टर अंबेडकर स्वयं कहते थे कि यदि मेरी चले तो इस संविधान को जलाने वाला सबसे पहला व्यक्ति मैं होऊंगा। इसलिए इस संविधान को बाबा छाप संविधान कहना डॉक्टर अंबेडकर जी का अपमान करना है। उनका राष्ट्रवादी चिंतन हम सबके लिए प्रेरणादायक है।

– डॉ राकेश कुमार आर्य

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो.: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970